ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 309-311
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था : अवसर एवं चुनौतियाँ

डॉ0 माधवी शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र, महादेव रामस्वरूप डिग्री कॉलिज, बकैनिया भाट, मिलक, रामपुर (उ0प्र0) भारत

Received-13.06.2023, Revised-20.06.2023, Accepted-25.06.2023 E-mail: smadhvi 590@gmail.com

सारांश: *वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की एक महत्वपूर्ण आर्थिक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत विश्व के विभिन्न देशों के बीच व्यापार, पूंजी, तकनीक, संस्कृति तथा सेवाओं का आदान–प्रदान तीव्र गति से होता है। 1991 में भारत द्वारा नई आर्थिक नीति अपनाने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति मिली। उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की नीतियों ने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।*

वैश्वीकरण के कारण भारत में विदेशी निवेश, तकनीकी विकास, रोजगार के अवसर, निर्यात वृद्धि तथा सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग तथा ई–कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इसके साथ ही भारतीय उपभोक्ताओं को वैश्विक उत्पादों और सेवाओं तक पहुँच प्राप्त हुई।

हालाँकि वैश्वीकरण के अनेक सकारात्मक प्रभाव पड़े, किन्तु इसके कारण आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, कृषि संकट, सांस्कृतिक प्रभाव तथा छोटे उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। प्रस्तुत लेख में वैश्वीकरण की अवधारणा, भारतीय अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव, उससे प्राप्त अवसरों तथा उत्पन्न चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– वैश्वीकरण, भारतीय अर्थव्यवस्था, व्यापार, पूंजी, तकनीक, संस्कृति, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, ई–कॉमर्स।

प्रस्तावना– विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंधों के विस्तार की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहा जाता है। वैश्वीकरण ने विश्व को "वैश्विक गाँव" में परिवर्तित कर दिया है। आज संचार, परिवहन तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण विश्व के देशों के बीच दूरी कम हो गई है।

भारत में वैश्वीकरण की शुरुआत 1991 की नई आर्थिक नीति से मानी जाती है। उस समय भारत गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी, बढ़ता राजकोषीय घाटा तथा आर्थिक विकास की धीमी गति के कारण भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक की सहायता से आर्थिक सुधारों को लागू किया।

इन सुधारों के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण (LPG मॉडल) की नीतियाँ अपनाई गईं। परिणामस्वरूप भारतीय बाजार विदेशी निवेशकों के लिए खोले गए तथा व्यापारिक प्रतिबंधों में कमी की गई। इससे भारत की अर्थव्यवस्था विश्व बाजार से जुड़ गई।

वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की। एक ओर भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हुआ, वहीं दूसरी ओर सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं में वृद्धि भी देखने को मिली। इसलिए वैश्वीकरण को केवल आर्थिक प्रक्रिया न मानकर सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

वैश्वीकरण की अवधारणा– वैश्वीकरण का अर्थ हैकृविश्व की अर्थव्यवस्थाओं का आपसी एकीकरण। इसमें वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, तकनीक तथा श्रम का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र प्रवाह शामिल होता है। वैश्वीकरण के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं:

- व्यापार उदारीकरण
- विदेशी निवेश को प्रोत्साहन
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार
- तकनीकी विकास
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा
- संचार एवं परिवहन का विकास
- भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण का विकास

भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद तीव्र हुई। सरकार ने आयात–निर्यात नीतियों को सरल बनाया, विदेशी निवेश पर नियंत्रण कम किए तथा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित किया।

- प्रमुख आर्थिक सुधार
- औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली में कमी
- विदेशी निवेश की अनुमति
- आयात शुल्क में कमी
- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण
- वित्तीय क्षेत्र में सुधार

इन सुधारों से भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक प्रतिस्पर्धी बनी और विदेशी कंपनियों ने भारतीय बाजार में निवेश करना प्रारंभ किया।

वैश्वीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था को प्राप्त अवसर–

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

1. विदेशी निवेश में वृद्धिः वैश्वीकरण के बाद भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। विदेशी कंपनियों ने भारत में उद्योग स्थापित किए, जिससे पूंजी निर्माण और रोजगार के अवसर बढ़े। ऑटोमोबाइल, दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी तथा खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्रों में विदेशी निवेश का बड़ा योगदान रहा।

2. तकनीकी विकासः वैश्वीकरण के कारण भारत को आधुनिक तकनीक प्राप्त हुई। सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, मोबाइल संचार तथा डिजिटल सेवाओं का तेजी से विकास हुआ।

आज भारत विश्व का प्रमुख आईटी हब बन चुका है। भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

3. रोजगार के अवसरों में वृद्धिः वैश्वीकरण के कारण निजी क्षेत्र का विस्तार हुआ, जिससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए। बीपीओ, कॉल सेंटर, बैंकिंग, पर्यटन तथा आईटी क्षेत्र में लाखों युवाओं को रोजगार मिला।

4. निर्यात में वृद्धिः वैश्वीकरण के कारण भारतीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार प्राप्त हुआ। वस्त्र उद्योग, औषधि उद्योग, आईटी सेवाएँ तथा कृषि उत्पादों के निर्यात में वृद्धि हुई। भारत की विदेशी मुद्रा आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

5. उपभोक्ताओं को लाभः वैश्वीकरण के कारण भारतीय उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार के उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध हुए। प्रतिस्पर्धा बढ़ने से वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ और कीमतों में संतुलन बना।

6. सेवा क्षेत्र का विकासः वैश्वीकरण ने भारतीय सेवा क्षेत्र को नई दिशा प्रदान की। बैंकिंग, बीमा, दूरसंचार, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

आज सेवा क्षेत्र भारतीय GDP में सबसे अधिक योगदान देता है।

वैश्वीकरण से उत्पन्न चुनौतियाँ–

1. आर्थिक असमानता में वृद्धिः वैश्वीकरण का लाभ मुख्यतः शहरी एवं उच्च वर्ग को अधिक मिला, जबकि ग्रामीण एवं गरीब वर्ग अपेक्षाकृत पीछे रह गया। अमीर और गरीब के बीच आय का अंतर बढ़ता गया, जिससे सामाजिक असमानता में वृद्धि हुई।

2. छोटे उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभावः विदेशी कंपनियों की प्रतिस्पर्धा के कारण भारत के छोटे एवं कुटीर उद्योग प्रभावित हुए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बड़े उत्पादन और आधुनिक तकनीक के सामने स्थानीय उद्योग टिक नहीं पाए, जिससे कई छोटे उद्योग बंद हो गए।

3. कृषि क्षेत्र की समस्याएँः वैश्वीकरण के कारण कृषि क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्धा बढ़ी। विदेशी कृषि उत्पादों के आयात से भारतीय किसानों को नुकसान हुआ। उर्वरकों, बीजों तथा कृषि उपकरणों की बढ़ती लागत ने किसानों की समस्याओं को और बढ़ा दिया।

4. बेरोजगारी की समस्याः हालाँकि कुछ क्षेत्रों में रोजगार बढ़ा, किन्तु स्वचालन और मशीनों के उपयोग के कारण पारंपरिक रोजगारों में कमी आई। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

5. सांस्कृतिक प्रभावः वैश्वीकरण के कारण पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज पर बढ़ा। उपभोक्तावाद, भौतिकवाद तथा पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन देखने को मिला। भारतीय संस्कृति और स्थानीय परंपराओं पर वैश्विक संस्कृति का प्रभाव एक गंभीर चिंता का विषय बन गया।

6. पर्यावरणीय चुनौतियाँः औद्योगिकीकरण और उत्पादन में वृद्धि के कारण पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरणीय संकट का कारण बना।

वैश्वीकरण और भारतीय कृषि– भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण का मिश्रित प्रभाव पड़ा।

- सकारात्मक प्रभाव
- कृषि तकनीक में सुधार
- आधुनिक बीज एवं उर्वरकों का उपयोग
- कृषि निर्यात में वृद्धि
- नकारात्मक प्रभाव
- उत्पादन लागत में वृद्धि
- किसानों की आय में अस्थिरता
- विदेशी प्रतिस्पर्धा का दबाव

कृषि क्षेत्र में सुधार हेतु सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य, कृषि बीमा तथा डिजिटल कृषि योजनाओं को लागू किया गया।

वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी– सूचना प्रौद्योगिकी वैश्वीकरण का सबसे सफल उदाहरण है। भारत ने आईटी क्षेत्र में विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे तथा नोएडा जैसे शहर आईटी केंद्र के रूप में विकसित हुए। भारतीय कंपनियाँ जैसेः Infosys, Tata Consultancy Services, Wipro ने वैश्विक बाजार में भारत की पहचान मजबूत की है।

भारतीय सरकार की भूमिका– भारतीय सरकार ने वैश्वीकरण के लाभों को बढ़ाने तथा चुनौतियों को कम करने के लिए विभिन्न नीतियाँ अपनाई हैं:

- मेक इन इंडिया अभियान

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

- आत्मनिर्भर भारत योजना
- डिजिटल इंडिया अभियान
- स्टार्टअप इंडिया योजना
- कौशल विकास कार्यक्रम

इन योजनाओं का उद्देश्य भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है।

भविष्य की संभावनाएँ– भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। यदि शिक्षा, कौशल विकास तथा तकनीकी नवाचार पर बल दिया जाए, तो भारत वैश्वीकरण के युग में विश्व आर्थिक शक्ति बन सकता है।

- आवश्यक कदम
- ग्रामीण विकास को प्राथमिकता
- कृषि सुधार
- रोजगार सृजन
- पर्यावरण संरक्षण
- सामाजिक न्याय एवं समावेशी विकास

निष्कर्ष– वैश्वीकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों लेकर आया है। इससे भारत में आर्थिक विकास, विदेशी निवेश, तकनीकी प्रगति तथा सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ। भारत की वैश्विक पहचान मजबूत हुई और देश विश्व अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बना।

इसके साथ ही आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, कृषि संकट तथा सांस्कृतिक प्रभाव जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। इसलिए आवश्यक है कि वैश्वीकरण की नीतियों को संतुलित एवं समावेशी बनाया जाए ताकि समाज के सभी वर्गों को विकास का लाभ प्राप्त हो सके।

यदि भारत सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता तथा तकनीकी प्रगति के साथ आगे बढ़ता है, तो वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्त एवं सुंदरम – भारतीय अर्थव्यवस्था
2. मिश्रा एवं पुरी – भारतीय अर्थव्यवस्था
3. अमर्त्य सेन – Development as Freedom
4. आर्थिक सर्वेक्षण, भारत सरकार
5. योजना पत्रिका, विभिन्न अंक
6. कुरुक्षेत्र पत्रिका
7. भारतीय रिज़र्व बैंक वार्षिक रिपोर्ट
8. विश्व बैंक रिपोर्ट
9. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) रिपोर्ट
10. NITI Aayog
11. Reserve Bank of India
12. Ministry of Finance, Government of India

*****